शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

गौतम बुद्ध की नारी के प्रति दृष्टि : एक अध्ययन

प्राप्तिः 07.04.2022
स्वीकृतः 06.06.2022

37

डा० शशी नोटियाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग
जे०वी० जैन डिग्री कॉलिज, सहारनपुर (उ०प्र०)
ईमेलः *shashijvjc@gmail.com*

प्रमोद कुमार
शोधार्थी
इतिहास विभाग
जे०वी० जैन डिग्री कॉलिज
सहारनपुर (उ०प्र०)

सारांश

किसी भी समाज की दशा का अनुमान उक्त समाज में नारी को प्रदत्त किये सम्मान की समीक्षा करके लगाया जा सकता है। नारी को सम्मान की दृष्टि से देखने वाला समाज ही स्वस्थ समाज कहलाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन का युग था। इस समय कई वैचारिक प्रणालियों का उदय हुआ। भारत संसार की सबसे प्राचीन वैचारिक प्रणालियों की जन्मभूमि है। भारत में उदित बौद्ध धर्म इसी तरह की वैचारिक प्रणाली थी, जिसने सम्पूर्ण विश्व पर गहरा प्रभाव डाला। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध ने नारी को आध्यात्मिक उपलब्धियों पवज्जया, निर्वाण के योग्य माना एवं उन्हें पुरूषों के समान ही बौद्ध संघ में प्रवेश की आज्ञा देकर भिक्षुणी संघ स्थापित किया। बौद्ध संघ शोषित एवं वंचित नारियों के लिए आध्यात्मिक आवलंबन सिद्ध हुआ। इसमें वर्षो से पुरूष प्रधान समाज में उपेक्षा की शिकार नारी को सम्मानित जीवन जीने का अधिकार प्राप्त हुआ। गौतम बुद्ध ने समाज का आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करने वाले भिक्षुओं को वृद्धा–नारी में माता, युवती में बहन एवं बालिका में पुत्री आदर्श देखने की सलाह दी। गौतम बुद्ध इस सत्य को भली भांति समझते थे कि नारी को सम्मान प्रदान करने वाला समाज ही वर्तमान को संवार कर स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करने में सक्षम होता है।

मुख्य बिन्दु

पवज्जया, निर्वाण, आध्यात्मिक, भिक्षुणी संघ, वैचारिक प्रणाली।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी धार्मिक क्रान्ति का काल, इतिहास में एक परिवर्तनकारी युग रहा है। यह सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में एक नई चेतना के विकास का काल था। इस कालखण्ड में संसार में एक महान धार्मिक क्रान्ति हुई। इस समय विभिन्न देशों के समाज में साधारणतया आध्यात्मिक एवं नैतिक हलचल हो गयी तथा अद्वितीय बौद्धिक और चिन्तन के आन्दोलनों का संचार हुआ। ये आन्दोलन सामाजिक और धार्मिक सन्दर्भों में बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हुए। परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण संसार में सुधारकों ने तत्कालीन कर्मकाण्ड व रीति रिवाजों पर अत्याधिक बल देने वाली धार्मिक व्यवस्था का विरोध किया।

भारत वर्ष में सर्वधर्म समभाव की पावन भावना से अनुप्राणित जिन महापुरूषों ने कर्म एवं साहित्य साधना के माध्यम से कई तरह के अविस्मरणीय कार्य किए हैं, उनमें बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का भी अपना विशिष्ट स्थान है।[1] ईसा पूर्व छठी शताब्दी में धार्मिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पन्न असनातन धर्मों में बौद्ध धर्म अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसके द्वार समाज के सभी वर्गों के लिए खुले हैं।

गौतम बुद्ध ने जिस समय स्वधर्म/बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया था, उस समय जनमानस धर्म का मूलतः सही रूप से भटक चुका था एवं मिथ्या के रीति रिवाजों में फंस चुका था। वे व्यर्थ के रूढ़िवादी विचारों में फंसकर दिशाहीन हो रहे थे। समाज के निम्न वर्ण की भांति नारी का स्थान भी उत्तर वैदिक काल में कमतर बिन्दु पर पहुंच चुका था।

नारी का सामाजिक सम्मान पुरूष के किसी भी रूप में पिता, पति या पुत्र के रूप में जुड़ा हुआ था। ''उन्हें स्वतंत्रता अत्यन्त सीमित रूप से प्राप्त थी। वे धार्मिक अनुष्ठानों में पुरूषों के समान सम्मिलित नही हो सकती थी।''[2] वे स्वतंत्रता पूर्वक अपनी उन्नति के मार्ग पर नहीं चल सकती थी। नारी की स्वतंत्रता एवं पुरूष से समानता का अधिकार समाप्त होने से उसकी स्थिति में निरन्तर गिरावट आती गयी, उनके अध्ययन की समुचित व्यवस्था का अभाव था। अधिकांशतः नारियां शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से वंचित ही रहती थीं।

गौतम बुद्ध आधी आबादी की हीन दशा को सुधारने हेतु आजीवन प्रयासरत रहे। उन्होंने समाज में फैली नारी के प्रति तुच्छ मनोदशा एवं उसके स्तर में परिवर्तन की प्रभावी कोशिश की, जिससे वे सम्मानित जीवन व्यतीत कर सकें। उन्होंने अकाट्य तर्क प्रस्तुत कर नारी की समाज निर्माण में भूमिका की व्याख्या की थी, जब कोशल नरेश प्रसेनजित की रानी मल्लिका देवी ने पुत्री को जन्म दिया था। जैसा कि उस काल में भी पुत्री जन्म उदासीनता का कारण बन जाता था। स्वाभाविक रूप से पुत्री जन्म का समाचार सुनकर राजा उदास हो गए थे। इस अवसर पर वहां विराजमान गौतम बुद्ध ने कौशल नरेश प्रसेनजित को नारी की महानता इन शब्दों में व्यक्त की थी –

राजन कोई–कोई स्त्रियां भी पुरूषों से बढ़ी चढ़ी, बुद्धिमती, शीलवती, सास की सेवा करने वाली और पतिव्रता होती हैं। अतः पालन–पोषण कर। दिशाओं को जीतने वाला महासूरवीर उससे पुत्र पैदा होता है, वैसी अच्छी स्त्री का पुत्र राज्य का अनुशासन करता है।[3]

महात्मा बुद्ध की नारी के प्रति दृष्टि सीमित रूप से परंपरागत है। जैसा कि इस कथन से प्रतीत होता है कि उनकी दृष्टि में नारी की महत्ता, उसके एक पत्नी, एक शूरवीर पुत्र की माँ के रूप में है।

महात्मा बुद्ध ने नारियों के लिए आध्यात्मिक मुक्ति का द्वार भी खोला। यद्यपि वैशाली के महावन के कूटागार भवन में अपनी विमाता प्रजापति गौतमी के तीन बार आग्रह और प्रधान शिश्य आनंद के समर्थन पर उन्होंने गौतमी को संघ में दीक्षित किया। गौतम बुद्ध ने वैशाली में प्रथम भिक्षुणी संघ की स्थापना कर नारी के लिए आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त कर इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। ''इस प्रकार भारत में पहली बार एक स्त्री के लिए भी घर छोड़कर आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग खुल गया।''[4] गौतम बुद्ध पुरूष और नारी को समान आध्यात्मिक दृष्टि से देखते थे। उन्होंने भिक्षु और भिक्षुणी संघ की स्थापना कर पुरूष और नारी को समान रूप में आध्यात्मिक आवलंबन प्रदान किए थे। ''सिद्धान्तों के स्तर पर स्त्रियों को संघ में शामिल करके बुद्ध ने पुरूषों तथा स्त्रियों की

समानता के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया।''[5] इस भिक्षुणी संघ में अनेक शोषित एवं वंचित नारियों ने प्रवेश पाकर आध्यात्मिक आवलंबन प्राप्त कर स्वयं का कल्याण किया। समाज की विकृति की दलदल में धंसी कई नारियों ने भिक्षुणी संघ में दीक्षित होकर सम्मानित व पवित्र जीवन व्यतीत किया। ''अम्बपाली, अड्ढकाशी, विमला जैसी दूषित जीवन व्यतीत करने वाली नारियों ने भी उस उत्तम भिक्षुणी संघ में प्रवेश कर अपना जीवन सफल बनाया था।[6] विद्वान भिक्षुओं के समान विभिन्न विदुषी भिक्षुणियों ने भी बौद्ध साहित्य को समृद्ध बनाया था। येरीगाथा इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इनके अलावा गृहस्थ जीवन यापन करने वाली नारियों ने उज्ज्वल चरित्र के उदाहरण प्रस्तुत किये। ''गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाली महिलाओं में भी विशाखा, मल्लिका आदि के उज्ज्वल चरित्र हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं।''[7] गौतम बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित होकर स्त्री समाज के विभिन्न वर्गों की नारियां बौद्ध धर्म में सम्मिलित होकर अपना जीवन सार्थक बनाने लगी थी।

बुद्ध काल से पूर्व नारी की वैदिक कालीन शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं रह गयी थी। बाल विवाह के कारण स्त्रियों के शिक्षा के अवसर उच्च वर्ग तक सीमित हो गये। गौतम बुद्ध शिक्षा के महत्व से अच्छी तरह परिचित थे। वे भी अन्य महापुरूषों के समान इस तथ्य को मानते थे कि ''शिक्षित समाज ही प्रगति के पथ पर चलने में सक्षम होता है।'' सभी समस्याओं के हल की केवल शिक्षा ही मूल चाबी होती है। शिक्षित नारी भी पुरूष प्रधान समाज में अपनी पहचान बना सकती है। गौतम बुद्ध के भिक्षुणी संघ ने इस क्षेत्र में महान क्रान्तिकारी कदम उठाये थे। भिक्षुणी संघ में नारी को शैक्षिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुंचने के सुनहरे अवसर प्राप्त थे। भिक्षुणी विहार में प्रव्रजित एवं गृहस्थ दोनों प्रकार की नारियों के शिक्षण की व्यवस्था थी। उस काल में नारी को जहां पुरूष से कमतर आँका जाता था, वहीं विदुषी भिक्षुणियों ने अपनी विद्वता के बल पर समाज में सम्मान भी प्राप्त किया था। ''संयुक्त निकाय में खेमा नाम की एक बौद्ध भिक्षुणी का प्रसंग है, जिसके उपदेश से प्रसेनजित इतना प्रभावित हुआ कि उन्होंने भिक्षुणी को सम्मान दिया।''[8]

गौतम बुद्ध के धर्म (बौद्ध धर्म) के द्वार सभी स्त्रियों के लिए खुले हुए थे, उनकी दृष्टि में गरीब की झोपड़ी से लेकर राजा के राजमहल तक एक समान थे। उनके धर्म चक्र के प्रकाश में दासी, महारानी बराबर थी। बौद्ध धर्म में ऊँच–नीच की मनोवृत्ति का कोई स्थान नहीं था। गौतम बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक नारियों ने पुरूष प्रधान समाज की बेड़ियों को तोड़कर मध्यम मार्ग का अवलम्बन कर ज्ञानामृत का पान किया था, उनमें से कुछ विदुशी महिलाएं विद्वता के चरम बिन्दु को छू गयी थी। स्वयं गौतम बुद्ध स्त्रियों को बुद्धिमान मानते थे और उनकी बुद्धि की प्रशंसा भी करते थे। एक अवसर पर धम्मदीना थेरी नाम की विदुशी उपासिका के ज्ञान की प्रशंसा स्वयं गौतम बुद्ध ने की थी।

अंगुत्तर निकाय में एक दूसरा प्रसंग उद्धत है, जिसके अनुसार, विशाखा नाम की एक उपासिका द्वारा पूछे गए प्रश्न के धम्मदीना थेरी द्वारा दिए गए उत्तर को सुनकर बुद्ध ने यही कहा था कि विशाखा, भिक्षुणी धम्मदीना वास्तव में विदुशी है। यदि ये प्रश्न तुमने मुझसे पूछे होते, मैंने भी तुम्हें बिल्कुल यही उत्तर दिया होता।[9]

तथागत के हृदय में नारी समाज के प्रति दया–भावना थी। वे सदैव नारी के प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। गौतम बुद्ध ने जहां अपने संघ में कुलीन एवं सामान्य परिवार की महिलाओं को प्रवेश दिया था, लेकिन उन्होंने इससे आगे बढ़कर उन महिलाओं को भी अपने जीवन में परिवर्तन लाने व आध्यात्मिक उन्नति करने का अवसर दिया था, जिनको समाज हेय दृष्टि से देखता था। गौतम बुद्ध ने अम्रपाली जैसी

गणिका को संघ में दीक्षित किया था, जो ब्राह्मण धर्म में सामाजिक रूप से तिरस्कृत थी। ''इसके विपरीत यह एक वास्तविक घटना है कि एक बार गुरू ने अम्रपाली का आतिथ्य स्वीकार किया था।''[10] गौतम बुद्ध ने जहां अम्रपाली जैसी गणिकाओं का उद्धार कर उन्हें सम्मानित जीवन प्रदान किया, वहीं उन्होंने पुरूष समाज के समान स्त्री समाज के कल्याण हेतु सदैव प्रयास किये। उन्होंने स्त्रियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि तुम्हें पुरूशों के समान अधिकार प्राप्त हैं, तुम अपने मातष्त्व धर्म से ऊपर उठकर विदुशी ज्ञानी बन सकती हो, तुम गृह शोभा न होकर विश्व वन्दनीया बन सकती हो, तुम भी अनुराग, ईर्ष्या, मोह, माया को नष्ट कर विश्व के कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर सकती हो। गौतम बुद्ध नारी समाज पर करूणा की वर्षा करने वाले अपने समय के महान धर्म सुधारक थे।

गौतम बुद्ध नारी को श्रद्धेय दृष्टि से देखते थे। उनकी श्रद्धेय दृष्टि में नारी के प्रति सदाचरण के भाव समाहित थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को नारी के प्रति आदरणीय विचार रखने एवं सदाचरण अपनाने के धर्मोपदेश दिये थे। गौतम बुद्ध इस सत्य से परिचित थे कि सदाचारी समाज ही चिरकाल तक मानव सभ्यता की उन्नति का वादक होता है। उन्होंने पुरूष के समान ही नारी के कल्याण का भी ध्यान रखा, उनके अनुसार पुरूष को नारी के प्रति मर्यादित एवं नैतिकता से परिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। गौतम बुद्ध ने समाज का आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करने वाले भिक्षुओं को नारी के प्रति नैतिकतापूर्ण दृष्टि रखने की शिक्षा इन शब्दों में दी थी। ''अगर वह स्त्री वृद्धा है तो उसे अपनी माता समझो और अगर युवती है तो अपनी बहन और अगर वह बच्ची है तो उसे अपनी पुत्री मानो।''[11] गौतम बुद्ध द्वारा दिये भिक्षुओं को स्त्री समाज के प्रति नैतिक दृष्टि रखने के धर्मोपदेश वास्तव में नारी को उनके द्वारा प्रदान किया गया सुरक्षा चक्र है। वे दूरदृष्टा महापुरूष थे। वे जानते थे कि भिक्षुणी संघ बनने के पश्चात, भिक्षुओं की नैतिकतापूर्ण दृष्टि बौद्ध धर्म को स्थायीत्व प्रदान करेगी। फलतः गौतम बुद्ध की नैतिकतापूर्ण शिक्षा से समाज में नारी के सम्मान व सुरक्षा में वृद्धि हुई। नारी के प्रति नैतिकतापूर्ण दृष्टि रखने वाला समाज उन्नतिशील एवं स्थायित्वपूर्ण होता है। गौतम बुद्ध को इस बात का ज्ञान था कि यह कार्य इंद्रियों को संयमित रखकर ही किया जा सकता है। जब अम्रपाली अपने आश्रवन में बुद्ध तथा उनके संघ को अपने निवास स्थान पर पूर्वाह्न का भोजन के लिए निमंत्रण देने गई, तब गौतम बुद्ध ने अपने भिक्षुओं को इन्द्रिय संयम रखने के लिए कहा था।'' बुद्ध ने उसके मोहक सौंदर्य तथा स्त्री सुलभ हावभाव का उल्लेख करते हुए अपने भिक्षु–शिश्यों को सचेत कर दिया कि वे सावधान होकर अपनी इन्द्रियों पर संयम रखे।[12] यानि बुद्ध स्त्रियों को पुरूष के अध्यात्मिक अभ्यास में एक रूकावट समझते थे।

गौतम बुद्ध ने अपने सम्पर्क में आने वाली तीनों प्रकार की नारियों (माताओं, भिक्षुणियों एवं उपासिकाओं) के कल्याणार्थ धर्मोपदेश दिये। उन्होंने माता की सेवा को संसार का परम सुख कहा है। भिक्षुणियों को संयमित जीवन व्यतीत करते हुए ध्यान–भावना करने का उपदेश दिया एवं उपासिकाओं को सदाचारिणी रहकर धर्मानुकूल सुखपूर्वक गृहस्थ जीवन जीने की शिक्षा दी। वे कन्या के अल्पायु विवाह के विरुद्ध थे। ऐसा विवाह पतन का कारण होता है। बहुविवाह प्रथा अनेक समस्याओं की मूल होती है। बुद्ध काल में बहुपत्नी विवाह की प्रथा प्रचलित थी। गौतम बुद्ध ने इस समस्या के समाधान हेतु पुरूषों को एक पत्नीव्रत पालन की नैतिक शिक्षा दी। मेंडक के पौत्र उग्गह के निवेदन करने पर उसकी पुत्रियों को नारी जाति के हित हेतु अग्रलिखित शब्दों में धर्मोपदेश दिये थे –

कन्याओं! इस प्रकार का अभ्यास डालो कि हमारा हित और भलाई चाहने वाले हमारे अनुकंपक माता–पिता, जिस किसी पति को भी हमें सौंप देंगे, हम पहले सोकर उठने वाली होंगी और सभी चीजों की व्यवस्थित रखने वाली मधुर भाषिणी होंगी।[13] महात्मा बुद्ध की नारियों के प्रति दृष्टि पर तत्कालीन समाज में व्याप्त नारी की छवि से बहुत भिन्न नहीं थी। वे भी पत्नी का आदेश पति की आज्ञा मानने वाली पत्नी का था।

गौतम बुद्ध ने समाज की दलदल में धंसी अम्रपाली को भी सम्मान प्रदान किया था। तथापि कहीं–कहीं बुद्ध नारी के प्रति तत्कालीन परंपरागत दृष्टिकोण से श्रेष्ठ है। जैसे कि विदित है कि ''आम्रपाली (बुद्ध ने इसे आर्या अम्बा कहा) वैशाली की प्रसिद्ध नगर वधू (गणिका/जनपद कल्याणी) थी''[14] का आतिथ्य स्वीकार किया। गौतम बुद्ध ने नारी समाज पर करूणा कर आध्यात्मिक ज्ञान की वर्षा कर, जो इतिहास रचा, वह ''न भूतो न भविष्यति'' बन गया। ''छठी/पाँचवी शताब्दी सा0सं0पू0 के संदर्भ में बुद्ध के द्वारा एक स्त्री की आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निश्चित रूप से महत्वपूर्ण आयाम का निर्माण किया था।''[15] गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म में नारी को पुरूष के समान ही बराबर का स्थान प्राप्त है। इस धर्म में स्त्री को सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने की उत्तम व्यवस्था की गयी है। गौतम बुद्ध द्वारा उदित बौद्ध धर्म में नारी के प्रति व्यवहार के परिणाम के प्रकार को स्पष्ट शब्दों में समझाया गया है कि ''उसके अनादर में मनुष्य का पतन है तथा उसको सम्मान प्रदान करने में सुख–समृद्धि के साम्राज्य की प्राप्ति।''[16] बौद्ध धर्मानुसार वह घर सम्मान प्राप्ति का अधिकारी है, जिसमें स्त्रियों का सम्मानपूर्वक धार्मिक संस्कारों से पालन–पोषण किया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि गौतम बुद्ध की नारी के प्रति दृष्टि सम्मानपूर्ण एवं करूणामय थी।

विनयपिटक के चुल्लवग में दिये गये विवरण अनुसार महात्मा बुद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश के इच्छुक नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपनी मौसी प्रजापति के निवेदन को तीन बार ठुकरा दिया था। अन्ततः उन्होंने अपने प्रिय शिश्य आनंद के कहने पर स्त्रियों को संघ में प्रवेश दिया। संघ में कई बौद्ध भिक्षुणियां, विदुशी भिक्षुणियां थी। धम्मादीन, खेमा, अडडकाशी इत्यादि इस काल में थी।

थेरी गाथा में इसी प्रकार की विदुशी भिक्षुणियों के गीत संकलित हैं, जिनमें से कुछ भिक्षुणियों की लेखनी से उनका पवज्जया प्राप्त करने का आभास होता है।

महात्मा बुद्ध की नारी के प्रति दृष्टिकोण तत्कालीन समाज में व्याप्त दृष्टिकोण से कुछ सीमा तक भिन्न एवं उदारवादी था। उन्हें संघ में प्रवेश देना, पवज्जया के लायक समझना, नारियों से सम्बन्धित बुराईयों की भर्त्सना करना, इसमें महत्वपूर्ण है, किन्तु यह कहना न्यायसंगत नहीं होगा कि महात्मा बुद्ध का नारियों के प्रति दृष्टिकोण पूर्णतया क्रांतिकारी हो। यह कहना न्यायोचित नहीं है, वह स्त्री के परंपरागत रूप से प्रभावित थे।

सन्दर्भ

1. झा, डी०एन०. (2009). प्राचीन भारत एक रूप रेखा. मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्सः नई दिल्ली पृष्ठ **41.**
2. विद्यावती. (1966). 'मालविका' भगवान गौतम बुद्ध. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालयः वाराणसी पृष्ठ **5.**

3. (1954). संयुक्त–निकाय, 3.2.6, हिन्दी अनुवादक भिक्षु जगदीश कश्यप. भिक्षु धर्मरचिता महाबोधि सभा– सारनाथ. पृष्ठ **78.**
4. बापट, पी०वी० (2010). बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकारः नई दिल्ली. पृष्ठ **7.**
5. सिंह, शैलेंद्र प्रताप. (2012). बुद्ध के बढ़ते कदम. वाणी प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **67.**
6. विद्यावती. (1966). 'मालविका'. पूर्वोद्धृत. पृष्ठ **53.**
7. उपरोक्त. पृष्ठ **53.**
8. सिंह, उपिन्दर. (2008). ए हिस्ट्री आफ एन्सिएण्ट एण्ड अर्ली मेडीवल इण्ड़िया. हिन्दी अनुवादक हितेन्द्र अनुपम. (2018). प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास. पिपर्सन इंड़िया एजुकेशन सर्विसेज प्रा0लि0ः नोएड़ा. पृष्ठ **330.**
9. उपरोक्त. पृष्ठ **330.**
10. झा, डी०एन०. (2000). पूर्वोद्धृत. पृष्ठ **45.**
11. पॉल, कारूस. (1894). गॉस्पेल ऑफ बुद्धा. हिन्दी अनुवादक विद्यानिधि. (2012). बुद्ध गाथा. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकारः नई दिल्ली. पृष्ठ **69.**
12. दत्त, नलिनाल., वाजपेयी, कृष्णदत्त. (1956). उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास. प्रकाशन ब्यूरो उत्तर प्रदेश सरकारः लखनऊ. पृष्ठ **91.**
13. अंबेडकर, बी०आर०. (1957). द बुद्धा एण्ड हिज धम्मा. हिन्दी अनुवादक भदन्त आनंद कौसल्यायन. (2016). बुद्ध और उनका धम्म. बुद्धम् पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **395.**
14. प्रजापत, पप्पू सिंह. (2018). प्राचीन भारत : नवीन सर्वेक्षण. रॉयल पब्लिकेशनः जोधपुर. पृष्ठ **190.**
15. सिंह, उपिन्दर. (2008). ए हिस्ट्री ऑफ एन्सिएण्ट एण्ड अर्ली मेडीवल इण्ड़िया. पूर्वोद्धृत. पृष्ठ **330.**
16. विद्यावती. (1966). 'मालविका' भगवान गौतम बुद्ध. पूर्वोद्धृत. पृष्ठ **56.**